चीनी मिल के कचरे से बनाया जैविक पोटाश, बचेगी विदेशी मुद्रा

जागरण विशेष

एनएसआइ ने विकसित की तकनीक, आयातित पोटाश से कम होगी कीमत

अखिलेश तिवारी • कानपुर

चीनी मिल में एथनाल तैयार करने के दौरान निकलने वाली जिस राख को केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने हानिकारक मानकर खुले में फेंकने पर रोक लगा रखी है, उससे अब जैविक पोटाश तैयार किया जा रहा है। कानपुर स्थित राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआइ) द्वारा विकसित इस तकनीक ने पोटाश उत्पादन के क्षेत्र में देश को

r.jagran.com/epaper/punjab-all-editions-epaper.html

आत्मनिर्भर बनाने का मार्ग प्रशस्त किया है।

ऐसे होता है तैयार: चीनी उत्पादन के दौरान निकलने वाले शीरे से एथनाल बनाया जाता है। एथनाल तैयार करने के बाद जो राख निकलती है, उसमें चीनी मिल का अपशिष्ट (स्लज) मिलाकर जैविक पोटाश तैयार की जा रही है। इस तकनीक से अब हानिकारक राख भी उपयोगी बन रही है और पर्यावरण को होने वाले नुकसान को भी रोकने में सफलता मिल रही है।

प्रतिवर्ष छह लाख मीट्रिक टन होगा उत्पादन: एनएसआइ की तकनीक के जरिये पहली बार खदानों के बाहर प्राकृतिक तौर पर पोटाश का उत्पादन संभव हुआ है। कृषि क्षेत्र में मुख्य रूप से उपयोग किए जाने वाले पोटाश का आयात अभी मुख्यतः कनाडा, बेलारूस और दक्षिण कोरिया से किया जाता है। हर वर्ष करीब 40 लाख मीट्रिक टन पोटाश का आयात होता है। बढ़ती मांग के कारण आयातित पोटाश की मांग भी बढ़ रही है। एनएसआइ द्वारा विकसित तकनीक से अब देश में हर वर्ष करीब छह लाख मीट्रिक टन पोटाश का उत्पादन संभव होगा जिससे आयात घटेगा और विदेशी मुद्रा भंडार की भी बचत होगी। एक और लाभ यह है कि इस तकनीक से तैयार किए जाने वाले जैविक पोटाश की कीमत आयातित पोटाश के मुकाबले करीब 75 प्रतिशत तक कम होती है।

नई तकनीक से पोटाश उत्पादन और बिक्री शुरू

खाद की दुकानों पर अभी आयातित पोटाश 18 रुपये प्रति किलो की दर से उपलब्ध है। जबकि नई तकनीक से तैयार जैविक पोटाश पांच रुपये प्रति किलो में मिल रहा है। विज्ञानी इसकी गुणवत्ता भी बेहतर बता रहे हैं। बलरामपुर शुगर मिल और ईआइडी पैरी ग्रुप ने जैविक पोटाश का उत्पादन शुरू कर दिया है। स्टार्टअप कंपनी जीआर मूवर्स भी उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर में करीब 400 टन पोटाश का प्रतिमाह उत्पादन कर रही है। निदेशक हर्ष गोविंद मोदी बताते हैं कि तीन वर्ष पहले 50 टन से शुरुआत की थी।

उप्र में शाहजहांपुर स्थित जीआर मूवर्स प्रा. लि. के संयंत्र में एथेनाल की राख व चीनी मिल के कचरे से तैयार किया जा रहा पोटाश • सौ. कंपनी »

" एथनाल उत्पादन से निकली राख के सदुपयोग की राह खुली है। यदि चीनी मिल प्रतिदिन 60 हजार लीटर एथनाल बना रही है तो वह हर रोज 10 टन पोटाश का उत्पादन कर सकती है। इस विधि से देश में हर वर्ष लगभग छह लाख मीट्रिक टन पोटाश का उत्पादन किया जा सकता है।

डा. नरेन्द्र मोहन, निदेशक, एनएसआइ, कानपुर

अतिरिक्त सामग्री पढ़ने के लिए स्कैन करें।